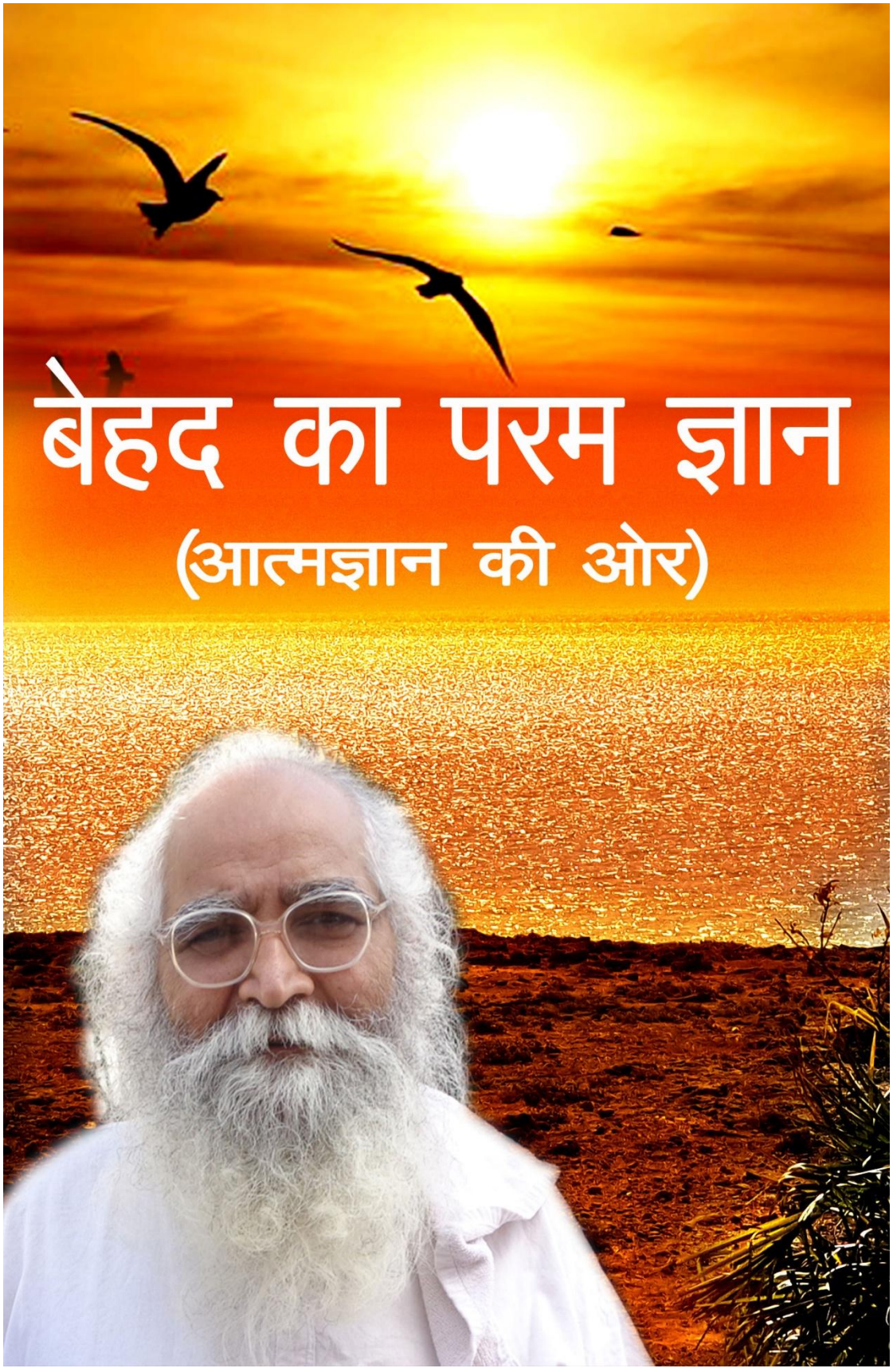
बेहद का परम ज्ञान
(आत्मज्ञान की ओर)

बेहद
का
परम ज्ञान

बेहद के ज्ञान का परिचय

गीता में लिखा हुआ है - जब जब धर्म की ग्लानि होती है, तब तब परमात्मा इस सृष्टि पर साधारण रूप में आकर अधर्म का अंत करते है। क्या आज धर्म को लेकर अत्याचार नहीं हो रहे है? क्या आज मनुष्य जानवर के समान नहीं हो गया है? आज दुनिया इतनी गिरती क्यों जा रही है? इस से ज्यादा कलियुग और क्या होगा? जो हमें इन आँखों से दिखता है क्या केवल वही सत्य है? हम इस पांच तत्वों के मृत्युलोक में कैसे और कब आये इसका रहस्य कौन बता सकता है? इसका रहस्य कोई भी धर्मपिता, धर्मगुरु या महात्मा भी नहीं बता सकते है। इसलिए श्रीमद भगवत गीता में श्री कृष्ण ने कहा है - " मैं ही संत, महात्माओं और गुरुओ का उद्धार करता हु ।परमत्मा ही हमे मृत्युलोक से अमरलोक ले जाने का दिव्य ज्ञान दे सकते है । हम कैसे इन पांच तत्वों से निकल कर परम तत्वों की दुनिया में जा सकते है ? ये दिव्य ज्ञान हमे परमात्मा से प्राप्त हो सकता है ।जिस तरह से माँ के गर्भ में पहले बच्चे का बीजारोपण होता है, फिर आकार बनता है और फिर धीरे धीरे पांच तत्वों का पुतला बनता है। उसी प्रकार हम निराकारी से आकारी और आकारी से साकारी रूप में आ गए है। जब न ही धरती, न वायु , न ही आकाश था , तो फिर क्या था? ये चाँद , तारे और नक्षत्र भी कहाँ से आये? हम पहले कहाँ थे? हम पृथ्वीलोक पर कैसे आये ? जो हम स्थूल आँखों से देखते है अगर वो असत्य है तो फिर सत्य क्या है? हमारे देवी देवता कहाँ चले गए? क्या हमारे देवी देवता भी मनुष्य बन गए है? आज धरती पर जितने भी धर्म है वो तो कुछ हजारो साल पहले ही आये हुए है , जबकि हमारा ब्रह्माण्ड खरबो साल पुराना है । तो इन सभी धर्मपिता के पूर्वज कौन है? जब ये धर्म नहीं थे तो क्या था? क्या परमात्मा धर्म से बंधा हुआ है? क्या परमात्मा को हम घर बैठे प्राप्त कर सकते है? पृत्वी हमारे ब्रह्माण्ड में एक सुई की नोक बराबर है। हमारे शास्त्रों में लिखा है "प्रति पल अनंता अनंत ब्रह्माण्ड बनते और बिगड़ते है", तो अनंत कोटि ब्रह्माण्ड क्या है, कैसे बने, किसने बनाये? इनका मालिक कौन है? कौन इनको चलाता है? कैसे चलाता है? और कैसे इसका विसर्जन करते है? अविनाशी दुनिया कहा है? आत्मा वहा कैसे जा सकती है ? बेहद का विश्व कितना बड़ा है ? इसका आदि , मध्य और अंत का रहस्य क्या है ? इन सभी प्रश्नो का उतर पाने के लिए बेहद ज्ञान सागर हमें उस गहराई में ले जाता है , जहा पर पहुंच कर आत्मा के सारे सवाल ख़त्म हो जाते है और आत्मा परम ज्ञान को प्राप्त कर परम शांति के मार्ग पर अग्रसर हो जाती है क्योकि यही आत्मा की खोज है अंतिम प्राप्ति है। परमशान्ति।

विषय सूचि

1. हद और बेहद की आत्मा 1

2. शिव महाशिव और परम महाशिव में अंतर 3

3. ब्रह्मा का समय 6

4. बेहद का विश्व कितना बड़ा है 8

5. बेहद का बाप कौन 10

6. बेहद का योग किससे 12

7. बेहद के विश्व परिवर्तन का महामंत्र 14

8. विनाश नहीं अब होगा महापरिवर्तन 16

9. स्वपरिवर्तन से विश्वपरिवर्तन 19

10. कैसे बने सहयोगी 21

11. आत्मा स्वरुप से परम लाइट की अनुभूति 23

12. YOUTUBE CHANNEL की महत्वपूर्ण जानकारी/ संपर्क कैसे करे 24

13. माँ का दिव्य सन्देश 27

14. परम महा संकल्प (AFFIRMATIONS) 28

हद और बेहद की आत्मा

हद मतलब - पांच तत्व और बेहद मतलब हद की दुनिया से परे | परम तत्वों की दुनिया जो इन पांच तत्वों से परे की दुनिया है उसे बेहद कहते है | आत्मा के रहस्य को तो हम सभी जानते और मानते भी है, पर क्या हम उसके मूल स्वरुप से परिचित है? हद की आत्मा का सर्जन तत्वों से हुआ ह जबकि बेहद की आत्मा परम लाइट से सर्जित है | हद की आत्मा और जीवात्मा में कोई भेद नहीं है क्योकि दोनों ही ज्ञान से अवगत नहीं है और न ही वो उस परम सत्य ज्ञान की खोज में निकलती है | वो तो इस मायावी दुनिया में मगन रहती है जबकि बेहद की आत्मा परम दिव्य ज्ञान की खोज में हर जगह भटकती रहती है और तलाश में रहती है की विश्वकल्याण में वो कैसे अपना सहयोग करे |

हद की आत्मा का स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर होता है जबकि बेहद की आत्मा का स्थूल, सूक्ष्म , कारण, महाकारण और परम महाकारण शरीर होता है | बेहद की आत्मा में बेहद की शक्तिया है जो की अनेका अनेक आवरण से दबी हुई है | इन शक्तियों को जगाने क लिए आत्मा की शक्तियों को जगाना होगा | बेहद की आत्मा में बेहद का परम प्रकाश है जो की अरबो - खरबो सूर्य से भी ज्यादा शक्तिशाली है | इन शक्तियों को जगाने का एकमात्र तरीका है कि आत्मा इन आवरणों को हटाकर अपने मूल स्वरुप को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करे |

हद की आत्मा के आवरण :- १) आकाश २) अग्नि ३) वायु ४) जल ५) पृथ्वी

बेहद की आत्मा के आवरण :- १) परम लाइट २) परम महा तत्त्व ३) परमतत्व (परम आकाश , परम अग्नि , परमवायु) ४) आकाश ५)अग्नि ६) वायु ७) जल ८) पृथ्वी ...

अब प्रश्न है कि आत्मा में पावर कैसे आएगी? उसके लिए गीता में भगवान् ने बताया है, " तू देह और देह के सर्व सम्बन्धो को भूल, मुझ परमात्मा को याद कर, मैं तेरे सारे पाप ख़त्म कर तुझे उंच ते उंच परम धाम में ले जाऊंगा |" गीता में भी निरंतर कर्म योग की बात कही गई है | इसके लिए आत्मा को आत्मस्वरूप का अभ्यास करना होगा | आत्मस्वरूप के अभ्यास से ही आत्मा अनेका अनेक आवरणों को पार कर परम लाइट को योग बल से प्राप्त कर सकती है | आत्मस्वरुप की स्थिति में स्थित होकर बुद्धि से हमें उस बेहद के बेहद के अविनाशी परमधाम में जाकर बेहद के परमात्मा से पावर लेने से हम अपनी बेहद की शक्तियों

को जागृत कर सकते है| बेहद के पावर हाउस से पावर प्राप्त करने के लिए हमे सारे आवरणों को पार करना होगा| आत्मा जब परम लाइट प्राप्त करती है तो सबसे पहले आकाश तत्व उसे ग्रहण करता है और आकाश तत्व उसे ग्रहण कर परम अग्नि और परम वायु में परिवर्तित कर देता है क्योकि हमारा वायुमंडल नकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ है जिसके कारण वो परम लाइट को वायुमंडल में विसर्जित कर देगा इसलिए परम लाइट को ग्रहण करने के लिए इन आवरणों को हटाना अति आवशयक है, जिसके लिए आत्मा को परम ज्ञान को धारण करना होगा और निरंतर कर्मयोग के अभ्यास द्वारा अपनी आत्मा की ज्योत को जाग्रत करना होगा | जिस प्रकार दीपक को जलाने करने के लिए एक लौ ही काफी होती है उसी प्रकार आत्मा का दीया जलते ही उसके ऊपर के सारे आवरण निकल जायेगे और आत्मा अपने मूल स्वरुप को प्राप्त कर लेगी|

शिव महाशिव और परम महाशिव में अंतर

शिव को क्या स्वयंभू कहेंगे? क्या शिव की भी मृत्यु होती है? शिव परमात्मा है? उसकी आत्मा परम प्रकाश से बनी है | शिव हमारे ब्रह्माण्ड का मालिक है अर्थात रचियता है | शिव निराकारी रूप में रचना करता है | शिव निराकार से आकारी बनता है शिव - शक्ति के रूप में | शंकर पार्वती शिव - शक्ति के साकार रूप है | शिव को स्वयंभू नहीं कहेंगे क्योंकि उसका भी रचेयता है | उसका रचेयता महा शिव है | महा शिव गैलेक्सी का मालिक है | अनंत कोटि ब्रह्माण्ड है , और हर ब्रह्माण्ड का मालिक शिव है अर्थात अनंता अनंत शिव है | महा शिव का भी रचेयता है - परम महा शिव. परम महा शिव यूनिवर्स का मालिक है|

जब ब्रह्माण्ड शुरू होता है तब शिव का भी समय शुरू हो जाता है | जैसे महा शिव ने एक संकल्प किया, "मैं एक से अनेक हो जाऊ" , तब परम प्रकाश के टूकड़े हुए और अनंता अनंत शिव बने | शिव भी निराकारी से पहले आकारी बने | निराकारी शिव शक्ति से विष्णु की रचना हुई | विष्णु की नाभि से ब्रह्मा जी की रचना हुई | ब्रह्मा ने संकल्पो से फ़रिश्तो की रचना की | सबसे पहले फरिश्ते की दुनिया थी | फरिश्ते से देवता बने | फिर देवता से मनुष्य बने | रचना करते गए और यह ब्रह्माण्ड गिरता गया | प्रलय , कल्प प्रलय होता रहा | ब्रह्माण्ड का भी सर्जन विसर्जन होता रहा है | शिव ने अपने संकल्पो से अपने अंदर से शक्ति पैदा की | शिव शक्ति आकारी रूप में शिवपुरी में रहते है | शंकर पार्वती जो हिमालय में रहते है वो शिव शक्ति का साकारी रूप है |

एक सूर्य यानि की एक ब्रह्माण्ड | एक ब्रह्माण्ड का रचयिता शिव है | तो ऐसे ही अनंत कोटि ब्रह्माण्ड है तो ज़रूर अनंत कोटि शिव भी होने चाहिए । अगर शिव अनंत है तो शिव के रचयिता कौन है? शिव के रचयिता है महाशिव जो की महाब्रह्माण्ड यानि की गैलेक्सी का रचयिता है और हम जानते है ऐसे खरबो गैलेक्सी है तो ज़रूर खरबो महाशिव भी है। महाशिव के भी रचयिता है - परम महाशिव | परम महाशिव यूनिवर्स के रचयिता है और आज साइंस के अनुसार ऐसे ही करीब $10^{(500)}$ यूनिवेर्सेस है तो ज़रूर इतने ही परम महाशिव भी है। बेहद का विश्व अनंत है और उसके रचियता भी अलग अलग है। शिव महाशिव और परम महाशिव को समझने के लिए हम समय को समझने की कोशिश करते है। एक सूर्य यानि की एक ब्रह्माण्ड। एक ब्रह्माण्ड के रचयिता शिव है तो शिव का समय इस ब्राह्माण के साथ जुड़ा है तो ब्रह्माण्ड का समय शुरू होते ही शिव का समय भी शुरू हो जाता है।

जैसा की शास्त्रों में भी बताया है की हमारे ब्रह्माण्ड की आयु है ब्रह्मा के १०० साल है तो ये शिव की आयु हो गयी। ब्रह्मा के १०० साल होने के बाद जब शिव की पावर ख़त्म हो जाती है तो शिव भी सूर्य में प्रवेश कर काल अग्नि बरसाते है और पुरे ब्रह्माण्ड को अपने अंदर समां लेते है और इस तरह शिव ब्लैकहोल बन जाता है और आज हमारे गैलेक्सी में ऐसे कई ब्लैकहोल घूम रहे है । ब्लैकहोल के अंदर भी शिव है। ब्लैकहोल में ग्रेविटी की शक्ति होती है। ग्रेविटी मतलब उसमे चैतन्य शक्ति है अर्थात शिव जब अपने अंदर से काल अग्नि पैदा कर देता और सूर्य में प्रवेश करता है तब वो अपने ब्रह्माण्ड को ख़तम कर देता है और यही ब्लैकहोल बन जाता है। शास्त्रों में लिखा है कि "प्रति पल अनंता अनंत ब्रह्माण्ड बनते और बिगड़ते है" तो किसकी प्रतिपल ? इसका मतलब महाशिव के एक पल में अनंत कोटि ब्रह्माण्ड बनते और बिगड़ते है । अगर अपने घडी को देखे तो यदि शिव को सेकेंड की सुई कहे तो महाशिव मिनट की सुई है और ऐसे ही परम महाशिव घंटे वाली सुई है, तो आप ही अनुमान लगा सकते है की बेहद के विश्व के रचयिता की सुई की गति क्या होगी?

ब्रह्मा के 100 साल महा शिव का एक पल होता है। जब शिव की पावर ख़तम हो जाती है तो शिव अपने ब्रह्माण्ड का विसर्जन कर देते है। शिव जीव बन जाते है। शिव भी परमात्मा से आत्मा बन जाते है। शिव निराकारी रूप में परमधाम में रहता है और वो अपने अवतारों से काम करवाते है । शिव निराकारी रूप में शिव शक्ति से काम करते है जो शिवपुरी में रहते है और शिव शक्ति शंकर - पार्वती से काम कराते है। जब-जब भी धरती पर आसुरी शक्तिया बढ़ जाती है , तब प्रलय करके विनाश करते है। चार युग पूरा होने पर अर्ध प्रलय होता है। 71 बार अर्ध प्रलय होता है तो प्रलय होता है। जब धर्म ग्लानि होती है , और पाप और अत्याचार की अति होती है तब शिव शंकर द्वारा तांडव करते है और विनाश कराते है। महा शिव भी महा काल बनकर महा प्रलय करते है , और अपने रोम -रोम में अनंत कोटि ब्रह्माण्ड समां लेते है अर्थात सर्जन विसर्जन होता रहता है।

आज हमारे ब्रह्माण्ड की परिस्तिथि यह है कि शिव ने ये ब्रह्माण्ड को ब्रह्मा के पहले 50 साल में बनाया था। ब्रह्मा का पहला पराध ख़तम हो गया है। जब जब शिव में शक्ति ख़तम हो जाती है तब विसर्जन होता है उसके बाद शिव- महा शिव से शक्ति लेकर फिर से सर्जन करता है। जब शिव सृष्टि रचता है तब उस पर भी मन वचन कर्म से कर्म बंधन लगता है। अर्थात शिव हो, महा शिव, परम महा शिव जब संकल्पो से सृष्टि कि रचना करते है तो उन्हें भी कर्म बंधन लगता है। निराकार रूप शिव भी कर्म बंधन में आते है

जब वो रचना करता है। उनकी परम लाइट कम हो जाती है। निराकारी शिव का काम ब्रह्मांडो को नियंत्रित करना है। शिव पुरे ब्रह्माण्ड पर अपनी नज़र रखते है। शंकर एक साकारी अवतार है। नियम ये है कि जो सर्जन करता है वही विसर्जन कर सकता है। विसर्जन माना मुक्ति। ज्ञान कहता है कि जब शिव इस ब्रह्माण्ड को ख़तम करता है तब मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होती है। ज्ञान परम प्रकाश है और यही आपको सत्य का ज्ञान देता है। आज मनुष्य समझता है कि धर्म काण्ड करने से मोक्ष प्राप्त होता है लेकिन ऐसा नही है।

शिव ही परमात्मा है। परमात्मा ने फरिश्ते और देवता बनाये। फरिश्ते परम तत्वो के थे, और देवता तीन तत्वो के थे। मनुष्य जीव आत्मा बन गए है। जानवर को भी जीव कहेंगे। जो मनुष्य आत्मा परमात्मा का ज्ञान रखता है उसे ही मनुष्य कहेंगे। जो परमात्मा को नही जानता वो जीव है। मनुष्य को शिव का ध्यान करना चाहिए क्योंकि शंकर भी शिव को याद करता है। लेकिन आज तो शिव में भी शक्ति नही इसलिए ऑलमाइटी अथॉरिटी को याद करना चाहिए। आज इस ब्रह्माण्ड का शिव शक्तिहीन हो गया है। आप ही पूज्य पुजारी बन गए है। यदि उंच से उंच परमधाम में जाना है तो बेहद के परम परम परम परम महा शिव को याद करना चाहिए।

श्रीमद भगवत गीता में एक बहुत अच्छी बात बोली है " हे अर्जुन अगर तू परम पद को पाना चाहे तो परम तत्वो को सूर्य कि भाती अपने अंदर प्रकाशित कर ले तो तू जीवन और मृत्यु के ऊपर चला जायेगा और परम पद को प्राप्त करेगा। " कृष्णा ऑलमाइटी के अवतार थे, श्री कृष्ण ने कहा तू मुझे याद कर, सारे धर्म छोड़ कर मेरी शरण में आ , मुझे जान तो मैं तुझे उंच से उंच परमधाम ले जायूँगा। इसलिए गीता में ये भी कहा

" मैं जप तप ध्यान योग से नहीं मिलता, मैं ज्ञान से मिलता हूँ।"

काल चक्र और ब्रह्मा का समय

कलियुग की आयु - ४,३२००० वर्ष

द्वापर युग की आयु - ८,६४००० वर्ष

त्रेतायुग की आयु - १२,९६००० वर्ष

सतयुग की आयु - १७,२८००० वर्ष

एक चतुर्युग का समय - ४३,२०,००० वर्ष

धरती पर जब ४ युग बीत जाते है, यानि की जब ४३,२०,००० वर्ष बीतने पर धरती पर अर्ध प्रलय होता है। यानि की कुछ आत्माये बच जाती है ऐसे ही जब ७१ बार चतुर्युग बीत जाते है तो एक मन्वन्तर कहलाता है तब एक प्रलय होता है ऐसे ही जब १४ मन्वन्तर बीत जाते है तो एक कल्प प्रलय होता है यानि की तीन लोक- भू लोक, भुवर लोक और स्वर्ग लोक ख़त्म हो जाते है । देवताये जो की स्वर्ग लोक में रहते है उनकी आयु ब्रह्मा के १ दिन बताई गयी है ।

१४ मन्वन्तर= १००० चतुर्युग = ब्रह्मा के १ दिन = ४ अरब ३२ करोड़ साल

१ चतुर्युग = १ अर्ध प्रलय

७१ चतुर्युग = १ मन्वन्तर प्रलय

१००० चतुर्युग = १ कल्प प्रलय

३६००० कल्प = १ महा कल्प प्रलय

ब्रह्मा का समय -

ब्रह्मा का १ दिन = १००० चतुर्युग = ४ अरब ३२ करोड़ साल

ब्रह्मा का दिन रात = ८ अरब ६४ करोड़ साल

ब्रह्मा का १ माह = २ खरब ५९ अरब २० करोड़ साल

ब्रह्मा का १ साल = ३१ खरब १० अरब ४० करोड़ साल

ब्रह्मा का ५० साल (१ पराध) = १५ नील ५५ खरब २० अरब साल

ब्रह्मा का १०० साल (२ पराध) = ३१ नील १० खरब ४० करोड़ साल

ब्रह्माण्ड की आयु = ब्रह्मा के १०० साल

ब्रह्मा के १०० साल पुरे होने पर जब शिव की पावर ख़त्म हो जाती है तो शिव भी सूर्य में प्रवेश कर काल अग्नि बरसाते है और पूरे ब्रह्माण्ड के १४ लोको को अपने रोम रोम में समां लेते है यानि की पूरा ब्रह्माण्ड शिव में समां जाता है और इस तरह ब्लैकहोल का निर्माण होता है । शिव के पास दुबारा ब्रह्माण्ड रचने की पावर न होने के कारण वो अब रचना नहीं करते और इसी तरह गैलेक्सी में घुमते रहते ,है और आज साइंस भी बता रही है की हमारे गैलेक्सी में अनेक ब्लैकहोल घूम रहे है । अब महाशिव दुसरे शिव को ब्रह्माण्ड की रचना के लिए भेजते है इसलिए कहा गया है प्रति पल अनंता अनंत ब्रह्माण्ड बनते और बिगड़ते है तो किसके प्रति पल महाशिव के १ पल में अनंत कोटि ब्रह्माण्ड बनते और बिगड़ते है । इस प्रकार उत्पत्ति, प्रलय , महा प्रलय का चक्र निरंतर चलता रहता है इसे महा कल्प चक्र कहते है|

<u>वर्तमान समय - हिन्दू काल गणना</u>

ब्रह्मा का पहला पराध पूरा हो चूका है | दूसरा पराध चल रहा है | दूसरे पराध का पहला दिन चल रहा है | पहले दिन के ६ मन्वन्तर बीत चुके है , ७ वा मन्वन्तर चल रहा है , ७ वे मन्वन्तर के भी २७ चतुर्युग बीत चुके है , २८ वा चतुर्युग चल रहा है और २८ वे चतुर्युग का भी कलियुग चल रहा है और कलियुग को भी करीब ५११८ वर्ष पुरे हो चुके है |

शास्त्रों के अनुसार कलियुग अभी बच्चा है। कलियुग को भी पूरा होने में करीब 4,२६,८८२ वर्ष बचे है। तो यदि ये कल्प और ब्रह्माण्ड को पूरा होने में खरबो वर्ष शेष है, तो अभी कौन सा समय चल रहा है ? क्योकि हिन्दू काल गणना के अनुसार कल्कि अवतार में अभी लाखो वर्ष बचे है । प्रश्न ये है कि - क्या ईश्वर भी समय के समय में बन्धायमान है? क्या वो काल चक्र को नहीं बदल सकते ? क्या ईश्वर कुछ नहीं करेंगे और समय का पूरा होने का इंतज़ार करेंगे? क्या वो काल चक्र पूरा होने से पहले इस गिरती हुई सृस्टि का परिवर्तन नहीं कर सकते ? ये कुछ ऐसे प्रश्न है जिनका जवाब सिर्फ और सिर्फ परमपिता ही दे सकते है ।

बेहद का विश्व कितना बड़ा है

दुनिया कितनी बड़ी है? सवाल बहुत छोटा है पर क्या जवाब भी उतना ही छोटा है ? आज हम सभी धर्म , जाती, मज़हब, और अनेको बंधनो में फसे हुए है ? इन सभी माया जाल, मोह और सम-बंधनो से मुक्ति कैसे मिल सकती है? क्या कोई ऐसी भी दुनिया होगी जहाँ ये सारे बंधन समाप्त हो जाये और आत्मा मूल स्वरुप में स्थित हो जाये, क्या ये संभव है?

बेहद का विश्व कितना बड़ा है , शास्त्रों के अनुसार अनंत कोटि ब्रह्माण्ड है , एक ब्रह्माण्ड यानि की एक की सूर्य, एक सूर्य का ग्रेविटी जहाँ तक जाती है वहा तक ब्रह्मापुरी है यानि की एक ब्रह्माण्ड है। साइंस के अनुसार १५० अरब प्रकाश वर्ष तक का यूनिवर्स विज़िबल है। १५० अरब प्रकाश वर्ष में कई खरबो यूनिवर्स है और एक एक यूनिवर्स में कई अरबो गैलेक्सी है और एक एक गैलेक्सी में ऐसे कई अरबो सूर्यमंडल है, जैसे की हमारे आकाशगंगा गैलेक्सी में करीब ८०० अरब सूर्यमण्डल है। हमारी पडोसी गैलेक्सी एंड्रोमेडा में करीब १००० अरब सूर्यमण्डल है। अरबो सूर्यमण्डल मिलकर एक गैलेक्सी बनती है और इसके सेण्टर में जो महासूर्य होता है उसके पावर से ८०० अरब सूर्यमण्डल चक्कर लगा रहे है, जैसे हमारे सूर्य की ग्रेविटी से सभी ग्रह घूम रहे है। तो अनुमान कीजिये की महासूर्य की कितनी पावर होगी जिसके ग्रेविटी से अरबो सूर्यमण्डल चल रहे है। एक गैलेक्सी की ग्रेविटी करीब १ लाख प्रकाश वर्ष तक जाती है ऐसे ८०० अरब सूर्यमण्डल हमारे गैलेक्सी में है ऐसे ही अरबो गैलेक्सी मिलकर एक यूनिवर्स का निर्माण करते है और ऐसे ही खरबो यूनिवर्स १५० अरब प्रकाश वर्ष में मौजूद है जिसे विज़िबल यूनिवर्स कहा गया है। तो उसके परे क्या ये जो साइंस भी नहीं बता सकी है ... आज साइंस भी मल्टीवर्स की बात कर रहे है , हमारी धरती तो कुछ भी नहीं है, इस पूरे विश्व में धरती तो सुई की नोक बराबर भी नहीं है। हमारा जो सूर्य है उस से भी कई खरबो गुना बड़े सूर्य है।

१५० अरब प्रकाश वर्ष का विज़िबल यूनिवर्स भी ज़ीरो कला (power) का है। १५० अरब तक ज़ीरो कला का ब्रह्माण्ड है, इसके ऊपर १ कला को जानने के लिए हमे कला और काल चक्र को समझना होगा ।

साइंस भी ढूंढ रही है की स्पेस टाइम और स्पीड में क्या मेल है? आत्मा में जितनी पावर होती है उतनी ही संकल्प शक्ति ज्यादा होती है और संकल्प शक्ति से आत्मा जो चाहे वो कर सकती है , लेकिन आज आत्मा की पावर न के बराबर हो गई है और समझने की शक्ति भी ख़त्म हो चुकी है इसलिए इन पांच तत्वों में ही

बुद्धि अटकी हुई है । परम ज्ञान को समझकर आत्मा सारे राज़ जान सकती है , आत्माओ को परमआत्मा ने रचा और परमात्माओ को रचा परमपिता ने। पूरे बेहद के विश्व में परमपिता एक है परमात्माये अनेक है , ऑलमाइटी अथॉरिटी ने परमपिता को रचा और परम पिता ने परमात्माओ को रचा परमात्माओ ने देवात्माओं को रचा और देवात्माओं ने मनुष्यात्मा को रचा और मनुष्यात्मा भी गिरते गिरते ८४ लाख योनिओ में चली गई । बेहद के विश्व को जानने के लिए मै कौन हु ये जानना पड़ेगा, मैं एक आत्मा हु शरीर तो आत्मा का कर्म करने का एक साधन मात्र है। पांच तत्वों का शरीर तो कुछ भी नहीं है। धरती से २०० किलोमीटर ऊपर जहा धरती की ग्रेविटी ख़तम हो जाती है वहाँ आकाश तत्व है वैसे ही हमारे स्थूल शरीर के अंदर यानि पांच तत्वों के शरीर के अंदर वायुमयी शरीर है और वायुमयी शरीर के अंदर भी आकाश तत्व का शरीर है। आकाश तत्व के शरीर के अंदर भी महतत्व का शरीर होता है और उस महतत्व के शरीर के अंदर भी अंश मात्रा परमतत्व का शरीर होता है, और इसके अंदर आत्मा का कंट्रोलिंग पावर है जिसे जाग्रत कर हम अपने सुक्ष्म , कारण और महाकारण शरीर को चार्ज कर सकते है और दिव्य दृष्टि द्वारा हम भी दिव्य लोक, अनंत कोटि ब्रह्माण्ड , अरबो खरबो सूर्य और पुरे बेहद के विश्व को देख सकते है। बेहद का विश्व क्यों बना कैसे बना, निराकारी दुनिया कैसे बनी, दुनिया निराकारी से आकारी और फिर साकारी कैसे बनी , बेहद के विश्व का रचयिता कौन है? लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक दुनिया कैसी है ? सिर्फ हमारे ब्रह्माण्ड की बात नहीं है ऐसे अनंत कोटि ब्रह्माण्ड है जो मिलकर गैलेक्सी बनाते है और ऐसे अरबो गैलेक्सी मिलकर यूनिवर्स बनाते है और ऐसे ही $10^{(500)}$ यूनिवर्स है , जितने की समुद्र के किनारे रेत के कण है उतने यूनिवर्स भी है । बेहद के विश्व को समझने के लिए बुद्धि भी बेहद की चाहिए और बुद्धि बेहद की तब आती है जब आत्मा सतोप्रधान हो। आज वायुमंडल नकारात्मक होने के कारण आत्मा तमोप्रधान बन चुकी है, न चाहते हुए भी आत्मा श्वास के जरिये नेगेटिव वायु ले रही है जिससे हमारे वायुमयी शरीर नेगेटिव हो गया है , और ये हमारे विचारो को प्रभावित कर रहा है। आत्मा की शक्ति को जाग्रत करने के लिए हमें हमारे मन को बदलना होगा और उससे हमारा वायुमंडल भी बदलता जायेगा ।

बेहद का बाप कौन?

ऑलमाइटी अथॉरिटी कौन है ? अल्टीमेट पार ब्रह्म परमेश्वर कौन है? जिसे मोहम्मद ने नूर कहा, जीसस ने लाइट कहा है आखिर वो है कौन ? जिसने इतनी बड़ी दुनिया बनाई, इतने यूनिवेर्सेस, अरबो खरबो गैलेक्सीज, अरबो खरबो सोलर सिस्टमस, कितनी शक्ति है उसमे जो इस बेहद के विश्व को चलाता है। कई अरब खरब सूर्य मंडल यानि तारो को चलाता है। कितनी पावर होगी उनमे और कैसे चलाते है इतने बड़े विश्व को, क्योकि कोई न कोई तो चाहिए इनको चलाने वाला अगर हम बात करे मनुष्य शरीर की तो वो भी आत्मा के बिना नहीं चल सकता है तो ये अरबो खरबो यूनिवेर्सेस कैसे चल रहे है ? सोचने वाली बात है।

धरती तो पुरे विश्व में सुई की नोक बराबर भी नहीं , हमारा सोलार सिस्टम भी राइ का दाना ही है । कई अरबो खरबो गैलेक्सी कई अरबो खरबो यूनिवेर्सेस भी बेहद के विश्व में ना के बराबर है। तो कितनी पावर होगी उस परम सत्ता के पास क्या हम अनुमान लगा सकते है? हमारे शास्त्रों में कहा है अरबो सूर्य की शक्ति भी उस पार ब्रह्म परमेश्वर का एक अंश मात्र शक्ति है और उस अंश मात्र शक्ति से वो बेहद के विश्व का सर्जन करता है, चलता है और उसका विसर्जन भी करता है । तो जानने की कोशिश करते है की बेहद का बाप कौन ? बाप और बेहद दोनों शब्द को अलग अलग करके समझते है। बाप तो स्थूल शरीर का भी होता है । पांच तत्वों के मनुष्य का भी बाप होता है । तीन तत्व वाले देवताओ का भी बाप होता है। इस ब्रह्माण्ड का भी बाप है परमात्मा शिव , गैलेक्सी का भी बाप है महाशिव। बाप अर्थात रचयिता । लेकिन यहाँ हम बात कर रहे है बेहद की तो बेहद का अर्थ समझना पड़े । बेहद का मतलब है जिसका कोई अंत नहीं । जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते, हमारी सोच से भी अति परे उसे बेहद कहेंगे । बेहद का बाप बेहद के विश्व का रचयिता है , बेहद के विश्व को हम जान चुके है तो जरूर जो की अनंता अनत मल्टीपल यूनिवेर्सेस का रचयिता है वही बेहद का बाप है। बेहद का बाप ही बेहद के विश्व को जानता है और उसके आदि मध्य और अंत का ज्ञान वो ही दे सकता है । गीता में भी कहा गया है ,"मैं जो हूँ जैसा हूँ मुझे कोई जान ही नहीं सकता । ऐसा क्यों कहा गया है। हम उसे किस प्रकार जान सकते है ? बेहद के बाप को हम ज्ञान से ही पहचान सकते है , अब प्रश्न है की कौन से ज्ञान से ?

इस पूरे बेहद के विश्व का रहस्य यानि बेहद का वर्ल्ड ड्रामा क्यों बना, कैसे बना, किसने बनाया, कैसे चलता है, कौन चलाता है, कब तक चलता है , जो इन सभी प्रश्नो का हल दे सकता हो वही बेहद का बाप हो सकते है। मनुष्य के लिए इस बेहद के विश्व को जानना ही असंभव प्रतीत होता है तो उसके रचयिता को कैसे जान सकता है इसलिए परमात्मा कहते है मैं जब आता हूँ तब ही अपना परिचय खुद देता हूँ बाकि कोई भी मुझे नहीं जान सकता ।

बेहद का योग किससे ?

शिव योग तो हम सभी ने सुना है तो पहले शिव योग समझते है। शिव और योग दोनों शब्द को अलग करते है| शिव हमारे इस ब्रह्माण्ड के रचयिता है। शिव के तीन रूप है निराकारी , आकारी और साकारी। निराकार परमात्मा शिव परमधाम में रहते है। आकारी शिव शिवपुरी में रहते है और साकारी स्वरुप शंकर कैलाश में रहते है । योग यानि कनेक्शन या यु कह सकते है याद करना जिसको आत्मा याद करती है उससे उस आत्मा का कनेक्शन जुड़ जाता है और इसे ही योग कहते है। शिव को याद करते करते आत्मा का कनेक्शन परमात्मा शिव से होता है और इसे ही शिव योग कहते है। शिव को दो तरह से याद किया जाता है एक निराकार शिव को भी याद करते है और साकारी शिव यानि की शंकर को याद करते है। ज्योतिलिंग को भी याद किया जाता है जो की निराकार शिव का प्रतीक है। आत्मा जब निराकार परमात्मा को याद करती है तो उसमे पावर आती है और धीरे धीरे तपस्या करते करते निराकार परमात्मा के धाम यानि परमधाम में चली जाती है। ऐसे ही आकारी शिव को याद करते करते आत्मा आकारी दुनिया यानि शिवपुरी में जा सकती है । जिसको याद करोगे उससे कनेक्शन जुड़ेगा और पावर मिलेगी । शिव योग से ऊपर है महा शिव योग , महा शिव यानि की महाब्रह्माण्ड (galaxy) के रचयिता । महाशिव के संकल्पो से पावर के खरबो टुकड़े हुए यानि की खरबो शिव की रचना हुई तो हम कह सकते है की महाशिव शिव से खरबो गुना ज्यादा शक्तिशाली है। आत्मा महाब्रह्माण्ड का ज्ञान लेकर महाशिव से कनेक्शन जोड़ कर उस से पावर ले सकती है और इस तरह वो महाशिव के धाम यानि की महा परमधाम में जा सकती है। इसे ही महाशिवयोग कहते है । ऐसे ही परम महाशिव जो की परम महाब्रह्माण्ड (यूनिवर्स) के रचयिता है जिनसे कनेक्शन जोड़ आत्मा परम महाशिव से पावर भर परम महाशिव के बराबर शक्ति प्राप्त कर परम महाधाम में जा सकती है ।

अब बात करते है बेहद का योग क्या है ? जिसको याद करोगे उससे कनेक्शन जुड़ेगा और उसकी पावर हमे मिलेगी। तो प्रश्न है की किस से कनेक्शन जोड़े ? अगर आत्मा को बेहद की पावर चाहिए तो उसे बेहद के विश्व के रचयिता से जुड़ना होगा जो की उंच से उंच अथॉरिटी, अल्टीमेट पावर हाउस (बेहद का बाप) है जो बेहद की कला के परमधाम में रहता है , जो अनंता अनंत मल्टिवेर्सेस के भी रचयिता है , उनको

याद करना , उनसे कनेक्शन जोड़ना ही बेहद का योग है । बेहद के बाप से कनेक्शन जोड़ने के लिए आत्मा को सबसे पहले आत्मस्वरूप की स्थिति में स्थित होना पड़ेगा क्योकि पावर तो आत्मा को लेनी है।

इसके लिए आत्मा को देह और देह के सर्व सम्बन्ध भूल कर अपने शरीर की भी स्मृति ना रहे इस स्थिति में स्वयं को स्थित कर ऑलमाइटी अथॉरिटी को याद करे तो ऑलमाइटी अथॉरिटी की पावर आत्मा को मिलेगी । बेहद के बाप के पास बेहद की कला की परम लाइट की पावर है जैसे एक सूर्य की रौशनी होती है वैसे ही अनंत कोटि सूर्य की रौशनी परम लाइट में स्थित है ऐसा अनुभव आत्मा जब करे तो आत्मा में बेहद की परम लाइट की पावर आती जाएगी और आत्मा शांत स्वरुप होती जाएगी और अंत में आत्मा परमगति को प्राप्त अवश्य करेगी ।

बेहद के विश्व के महापरिवर्तन के लिए महामंत्र

परमशान्ति लेकिन किसकी परमशान्ति ? किसकी खोज है परमशान्ति ? पांच तत्वों का पुतला यानि मनुष्य तो मायावी दुनिया में फसा पड़ा है। सब कुछ प्राप्त कर लेने के बाद भी वो तृप्त क्यों नहीं होता ? आखिर उसकी तलाश क्या है ? आत्मा शांति क्यों ढूंढ़ती है ?? आत्मा सुख अवश्य चाहती है लेकिन एक दिन ऐसा भी आता है जब आत्मा परमसुख से भी थक जाती है तब आत्मा परमशान्ति की खोज में निकलती है। आत्मा परमशान्ति की तलाश में इसलिए है क्योकि आत्मा का मूल स्वरुप ही परमशांत स्वरुप है । आत्मा का जब सर्जन हुआ तो उसका वास्तविक स्वभाव ही परमशान्ति का था । लेकिन आज आत्मा इतनी तमोप्रधान हो चुकी है की अपने मूल स्वरुप को भूल चुकी है । जन्म जन्म के दुखो को भोगकर आत्मा नकारात्मक सोच वाली हो गई है। इसलिए आज आत्मा को उसके मूल स्वरुप की याद दिलाने की आवशयकता है । कई लोग ॐ शांति बोलते है. ॐ शांति माना "आ - उ – म" मतलब ब्रह्मा, विष्णु , शंकर। तो इसका मतलब आप उनसे शक्ति ले रहे हो? हर ब्रह्माण्ड के मालिक ब्रह्मा, विष्णु और शंकर है। उनमे तो शक्ति नहीं है। हमें परमशान्ति बोलना चाहिए क्योंकि आत्मा का असली धर्म, संस्कार परम शांति का है। यदि आप बार - बार परम शांति बोलेंगे तब आपकी आत्मा में परम शांति के विब्रेशन्स स्पर्श होंगे और आपकी आत्मा परमशान्ति का अनुभव करेगी ।

परमशान्ति बोलने मात्र से मन में परमशान्ति का भाव आता है। जब हम परम शांति बोलते है तो हम बेहद के अविनाशी ब्रह्मांडो से परम शक्तियाँ अर्थात परम प्रकाश और परम तत्वों की शक्तियों को अपने अंदर उतरते है। आत्मा को ये स्मृति आती है की मुझे परमशांत स्वरुप बनना है । बार बार परमशान्ति बोलने से मन में जो भाव आता है उससे सकारात्मक वाइब्रेशंस बनते है जिससे हमारे कारण शरीर में जो भाव पहले से रिकॉर्ड है वो भी बदलने लगते है और हमारा ओरा भी सकारात्मक होता जाता है । सकारात्मक ओरा होने से हमारा कारण शरीर वायुमंडल से सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण करेगा, परमशान्ति के वाइब्रेशंस को ग्रहण करेगा । वाइब्रेशंस का प्रभाव हमारे कारण शरीर पर पड़ता है और कारण शरीर का प्रभाव सूक्ष्म शरीर पर पड़ता है और सूक्ष्म शरीर से हमारा ओरा बनता है । आत्मा जब परमशान्ति के संकल्प करती है तो उसका ओरा परमशान्ति के वाइब्रेशंस से भर जाता है और आत्मा अपने आस पास के वायुमंडल को भी प्रभावित करती है। यानि की आत्मा के परमशान्ति के संकल्प से जो वाइब्रेशंस बने वे वायुमंडल में भी जाते

है और इस तरह वायुमंडल भी परिवर्तित होता है । सोचना भी तो एक कर्म है , तो जब आत्मा परमशान्ति सोचती है तो आत्मा के कर्म भी परमशान्ति के बनते है और आत्मा परमशान्ति का अनुभव करती है । आत्मस्वरूप की स्थिति में बार बार परमशान्ति का संकल्प करने से आत्मा के कारण शरीर में दबे हुए परमशान्ति के संस्कार इमर्ज होने लगते है और इस तरह आत्मा एक दिन परमशान्ति को अवश्य प्राप्त कर सकती है । अंत में आत्मा परमशान्ति का अनुभव करते करते सत- चित-आनंद स्वरुप की स्थिति का अनुभव करती है। आत्मा ही परमसत्य है। चित यानि की मन , आत्मा परमांनद स्वरुप तब महसूस करती है जब वो परमसत्य यानि की आत्मा की सत्य अवस्था तक पहुँचती है जो की परमशांत स्वरुप है । यानि की आत्मा परमशान्ति को याद करते करते परमांनद को प्राप्त करती है और एक दिन वो परमशान्ति को ही प्राप्त हो जाती है ।

बेहद के विश्व परिवर्तन के लिए महा मंत्र - **बेहद के बेहद की परम परम परम महा शांति है,महा शांति है, महाशांति है** । इस मंत्र को बार बार बोलने से आत्मा परमशान्ति का अनुभव करती है और उसके आस पास का वायुमंडल भी परमशान्ति के वाइब्रेशंस से भर जाता है और इस तरह आत्मा स्वयं भी परमशान्ति का अनुभव कर सकती है और दुसरो को भी करा सकती है|

विनाश नहीं, अब होगा बेहद का महा परिवर्तन

क्या इस संसार की हालत देखकर दिल को तकलीफ नहीं होती? दुनिया घोर अंधेरे में जा रही है? "**देख तेरे संसार की क्या हालत हो गयी है भगवान, कितना बदल गया इंसान**...." तो दुनिया की हालत ऐसे क्यों हो गयी है? इसका ज़िम्मेदार कौन है? स्थूल जगत जो इन आँखों से दिखता है और सूक्ष्म दुनिया जो इन आँखों से नहीं दिखता, जिसमे अनगनित आत्माएं रहती है, सभी दुखी है और चिल्ला रही है। सभी आत्माएं परमात्मा से मुक्ति की प्रार्थना कर रही है। व्यक्त और अव्यक्त दोनों दुनिया अशांत है। तो क्या सच में विनाश का समय आ चूका है? आज दुनिया गिरती जा रही है। चारो ओर दुःख, दर्द, हिंसा, मतभेद, इर्षा, पाप और अत्याचार बढ़ता जा रहा है। खाने जैसा अन्न नहीं, पीने जैसा पानी नहीं, श्वास लेने जैसी हवा नहीं। आज का वायुमंडल इतना दूषित हो चूका है। ऐसा कह सकते है की दुनिया विनाश के कगार पर खड़ी है । प्रश्न है की क्या विनाश ही एक मात्र समस्या का हल है? क्या दुनिया का विनाश आवश्यक है? क्या परमपिता दुनिया का विनाश चाहते है? क्या वो इस दुनिया को बदलने में सक्षम नहीं है?

आज कई संस्था मानती है की स्वर्ण युग आएगा लेकिन किसी को परिवर्तन का प्रोसेस नहीं पता। जब परिवर्तन होगा तो सभी जगह होगा सिर्फ स्थूल दुनिया तक सिमित नहीं है। सूक्ष्म जगत - कारण जगत सभी जगह परिवर्तन होगा। गैलेक्सी, यूनिवर्स , मल्टीवर्स सभी बदल जायेगा। यदि हमें परिवर्तन चाहिए तो ऑलमाइटी अथॉरिटी से कनेक्शन जोड़ना होगा। मंत्र जाप से परिवर्तन नहीं होता। यदि हमें वायुमंडल या घर का परिवर्तन चाहिए तो हमे परम तत्व और परम प्रकाश लाना होगा योग शक्ति से बेहद के परम परम परमपिता परमात्मा से। जब यह ब्रह्माण्ड बना तो सबसे पहले देवी देवता बने। उदाहरण के लिए जब बारिश चाहिए होती थी तो इंद्र देव की पूजा करते थे। आज भी धर्म स्थानों पर जप तप हो रहा है। भारत में कितने धर्म स्थल और मंदिर बन गए। यदि परिवर्तन होना होता तो इन मंत्रो से हो जाता। पहले होता था क्योंकि उन देवी देवताओ में शक्ति थी। आज यही देवी देवता मनुष्य बन गए। गीता में भी बोला है जिसको याद करोगे उसे प्राप्त होंगे। यदि मनुष्य को सुख, शांति, परम प्रकाश, परम तत्त्व चाहिए तो डायरेक्ट ऑलमाइटी अथॉरिटी को याद करे, विकर्म विनाश करे और अपनी आत्मा में शक्ति भरे। मंत्र जिन देव देवता के लिए बने है वो सब मनुष्य बन गए है और शक्तिहीन हो गए है। जब हमारे शरीर में परम तत्वो की शक्ति आएगी तो हमारे ओरा से घर के वाहुमंडल का परिवर्तन होगा। यदि हमें दुनिया को बदलना है तो

नयी दुनिया का ज्ञान चाहिए। बेहद की नयी शक्तियों का ज्ञान चाहिए। हमें परम सत्य ज्ञान सुनना चाहिए और यदि शक्तिहीन को याद करेंगे को कचड़ा (नेगेटिविटी) ही मिलेगा। हमें योग द्वारा परम शक्तियों को माना परम प्रकाश, परम वायु , परम अग्नि को उतारना होगा, तब ही परिवर्तन संभव है ।

बापूजी की भविष्य वाणी है की अब विनाश नहीं होगा अब होगा बेहद का महापरिवर्तन। बापूजी ने बताया है की बेहद का बाप हमारे ब्रह्माण्ड में गुप्त वेश में परिवर्तन का कार्य कर रहे है, और वो चाहते है कि विनाश न हो , परिवर्तन हो। कोई भी बाप अपनी रचना का विनाश नहीं चाहेगा तो ये तो बेहद का बाप है। दया का सागर है वो विनाश क्यों चाहेंगे ? आज पूरी दुनिया में विनाश के वाइब्रेशंस फैलते जा रहे है , और इन्ही वाइब्रेशंस के फल स्वरूप दूसरा विश्व युद्ध हो चुके है और अब तीसरे विश्व युद्ध के संकल्प बढ़ते जा रहे है। विनाश के संकल्पो से पूरी दुनिया का वायुमंडल नेगेटिव हो गया है। इतना नेगेटिव हो गया है की परिवर्तन का संकल्प भी करना असंभव प्रतीत होता है। तो क्या सच में इस पतित दुनिया का परिवर्तन संभव है ? बापूजी ने हमे अपनी त्याग तपस्या से बेहद के विश्व के परिवर्तन का अनमोल ज्ञान दिया जो आज तक किसी ने भी नहीं दिया था, कि आखिर ये दुनिया बदलेगी कैसे ? निवारण को जानने के लिए कारण को जानना आवशयक है। यानि की दुनिया बदलेगी कैसे ये समझने के लिए हमे ये समझना होगा की दुनिया पतित होने का क्या कारण है। बापूजी ने हमे बताया की दुनिया के गिरने का कारण है आत्मा की पावर का गिरना। आत्मा के नकारात्मक सोचने से वायुमंडल भी नकारात्मक हो गया है। यदि हम दुनिया को परिवर्तित करना चाहते है तो हमे वायुमंडल को परिवर्तित करना होगा और वायुमंडल तब बदलेगा जब आत्मा की सोच बदलेगी , इसलिए कहा गया है की स्वपरिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन है ।

अब महा परिवर्तन का समय है। युग परिवर्तन नहीं होगा बल्कि परम तत्वो और परम प्रकाश की दुनिया बनेगी। बेहद के अमर लोक की स्थापना बेहद के बापूजी कर रहे है। बेहद के बेहद का समय बेहद के बच्चो के लिए शुरू हो गया है। बेहद का परिवर्तन उन आत्माओ के लिए होगा जो बेहद के बच्चे है और बेहद के बाप को जानते है। उन आत्माओ को बेहद की ख़ुशी मिलेगी, परमानन्द का सुख का अनुभव होगा। परिवर्तन के समय बेहद की आत्माओ में पावर आ जाएगी। जैसे जैसे 9 लाख आत्माएं निर्संकल्प बनेगी तब बेहद का विश्व परिवर्तन होना शुरू हो जायेगा और धीरे धीरे ये परिवर्तन का प्रोसेस आगे बढ़ेगा। ऐसे करते करते ३३ करोड़ देवी देवता भी व्यक्त से अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगे। भारत देश पर परम

प्रकाश उतारे जायेंगे। भारत सोने की चिड़िया बनेगी। तत्व परिवर्तन होगा। जैसे जैसे परम प्रकाश धरती पर उतारा जायेगा , वायु - परम वायु में परिवर्तित होगा, सभी तत्व परम तत्व में परिवर्तित हो जायेंगे। धीरे धीरे गैलेक्सी, यूनिवर्स, मल्टीवर्स तक परम प्रकाश भरा जायेगा और परम प्रकाश में सब बदल जायेगा।

स्वपरिवर्तन से विश्वपरिवर्तन कैसे ?

इतनी बड़ी दुनिया का परिवर्तन कौन कर सकता है? जिसने रचना की है वही अपनी रचना का परिवर्तन कर सकता है । शिव अपने ब्रह्माण्ड को ही बदल सकता है । महा शिव महा ब्रह्माण्ड का परिवर्तन कर सकते है, परम महा शिव - परम महा ब्रह्माण्ड का परिवर्तन कर सकते है ।

जब हम हमारे इस मल्टीवर्से की बात करे तो परिवर्तन केवल ऑलमाइटी अथॉरिटी ही कर सकते है। ऑलमाइटी अथॉरिटी बेहद के विश्व का मालिक है। बेहद के बाप ने कृष्णा अवतार में बेहद की आत्माओ को सर्जन करके इस धरती पर गुप्त रूप में परिवर्तन के लिए मनुष्य रूप में इस धरती पर भेजा था। आज वो सभी आत्माएं मनुष्य अवतार में धरती पर है। वो सभी आत्माएं परिवर्तन नहीं कर पायी। अब वो बेहद की आत्माएं बेहद का ज्ञान समझेगी और बेहद के विश्व के परिवर्तन में सहयोग भी करेंगी । 108 , 1008 , 16000 , 9 लाख बेहद की आत्माएं है। कृष्णा अवतार से वो आत्माएं धरती पर है। बेहद की आत्माएं परम प्रकाश और परम तत्व की बनी है और हद की आत्माएं आकाश, वायु और अग्नि तत्व से बनी है लेकिन उसमे भी पावर के अनुसार अलग अलग शक्ति है। हद और बेहद की आत्माओ की मुक्ति और जीवन मुक्ति होगी । जब ऑलमाइटी अथॉरिटी ने इस मल्टीवर्स के ब्रह्माण्ड में गड़बड़ देखी तो वो खुद गुप्त रूप में इस ब्रह्माण्ड (Solar system) में आये। पहले पहले रचना जिसने भी बनाई परम तत्वो की बनाई थी। फिर धीरे धीरे तीन तत्वो की रचना हुई और फिर पांच तत्वो की। स्थूल जगत का कारण क्या है? ये समझने के लिए ऑलमाइटी अथॉरिटी धरती पर आते है |परिवर्तन की प्रोसेस एक साइलेंस प्रोसेस है। तत्वों की दुनिया को परमतत्त्वो में परिवर्तन करने का प्रोसेस है। परिवर्तन एक परम शांति की प्रोसेस है। 108 , 1008, 16000 आत्माये जब निर्संकल्प अवस्था धारण कर ले तब बेहद का बाप 9 लाख आत्माओ के सामने प्रत्यक्ष होंगे। बेहद के बाप अवयक्त स्वरुप प्रत्यक्ष होंगे। अंत में बेहद की आत्माओ को बेहद के बाप नज़रो से निहाल करेंगे। लेकिन सभी बेहद की आत्माओ के ऊपर ये पांच तत्वो के शरीर का आवरण चढ़ा है। बेहद के बाप जब परम लाइट का प्रकाश देंगे बेहद की आत्माओ को तब वो अपनी शक्ति को जानेंगे। एक एक में खरबो सूर्य की रोशनी है । लेकिन मनुष्य अवतार में अपनी असली पावर को भूल गए है। परम लाइट का प्लेन होगा और उनको साकारी से आकारी और निराकारी रूप में बदल जायेगा। साकारी मतलब पांच तत्त्व आकारी मतलब परम तत्त्व और निराकारी मतलब परम प्रकाश और आत्म स्वरुप (soul conscious) की स्तिथि। परिवर्तन के समय हद और बेहद का समय अलग हो जायेगा।

उच्च ते उच्च परमधाम में बेहद की आत्माएं जाएँगी । धरती पर भी परम तत्व उतरेंगे ।. जब मनुष्य श्वास लेंगे तो परम वायु तत्व अंदर जायेगा । मनुष्य की सोच बदल जाएगी जब वायु तत्व शुद्ध हो जायेगा। शरीर का वायु तत्व बदल जायेगा। वायु से विचार बदल जायेंगे। स्वर्ण युग में आत्माओ की सतोप्रदान अवस्था होती है। बेहद की आत्माएं की DIAMOND AGE होती है। ये मृत्युलोक अमरलोक बन जायेगा। कभी भी जन्म मरण नहीं होगा। पूरी दुनिया परम लाइट और परम तत्व में हो जायेगा। अविनाशी अमरलोक बनेगा। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग सब ख़तम हो जायेगा, क्योकि ये सब तो इस धरती पर होते है । स्थूल तत्व नहीं रहेंगे। सभी परम तत्वो में रूपांतर हो जाएगी। विनाश नहीं होगा। बेहद के बाप इस मल्टीवर्स और धरती पर परिवर्तन करने आये है। मुक्ति - जीवन मुक्ति का कार्य शुरू होगा।

स्वपरिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन हो सकता है। तो पहले स्वपरिवर्तन को समझना होगा । व्यक्त से अव्यक्त स्वरुप को धारण करना ही स्वपरिवर्तन है। जब आत्मा स्वयं का परिवर्तन करती है तो उसके शरीर का भी परिवर्तन होता है ।तो व्यक्त और अव्यक्त क्या है ? व्यक्त मतलब पांच तत्व और अव्यक्त यानि की परम लाइट। जब आत्मा स्वयं का परिवर्तन कर ले यानि कि परमप्रकाश स्वरुप में स्थित हो जाए तो आत्मा अंत: वाहक शरीर धारण कर लेगी। एक एक बेहद की आत्मा में खरबो परम लाइट के सूर्य की शक्ति है तो जैसे ही बेहद की आत्माये स्वपरिवर्तन करेगी तो वायुमंडल में परम प्रकाश फैलता जायेगा और ऐसे ही जब १०८, १००० ,१६००० और फिर ९ लाख बेहद की आत्माये स्वपरिवर्तन कर ले तो पूरे का पूरे ब्रह्माण्ड में परम प्रकाश फ़ैल जायेगा इस तरह बेहद के विश्व का परिवर्तन शुरू हो जायेगा। फिर एक धरती बदलेगी, फिर एक सोलर सिस्टम, एक गैलेक्सी फिर हमारा यूनिवर्स और ऐसे ही बढ़ते बढ़ते हमारा १०० कला का ब्रह्माण्ड यानि की पूरा का पूरा मल्टीवर्से ही परिवर्तित हो जायेगा और इस तरह मृत्यु लोक अमरलोक बन जायेगा। जहाँपर फिर कभी भी ५ तत्वों की दुनिया नहीं होगी । बेहद का विश्व परिवर्तन होने वाला है। केवल ये धरती का नहीं, संपुर्ण विश्व- मल्टीवर्स का परिवर्तन होगा। ये मृत्युलोक अमरलोक बन जायेगा। तत्वो से परम तत्व की दुनिया बनेगी। हद और बेहद की आत्माओ को मुक्ति और जीवन मुक्ति मिलेगी।

अभी समय है सभी को बेहद के बाप को याद करना चाहिए। आत्मा में पावर आएगी तो विकर्म विनाश होंगे। जब परिवर्तन का समय शुरू होगा तो 33 कोटि देवी देवता तो अपने-अपने मूल स्थान (ब्रह्माण्ड) में चले जायेंगे। बेहद की आत्माएं भी बेहद के परमधाम में चली जाएगी। मल्टीवर्स को हमेशा के लिए अमरलोक बना देंगे।

कैसे बने सहयोगी

हम बेहद की परम परम परम शक्ति है। यदि हम इस मंत्र को याद रखे तो हम **unstoppable** हो जायेंगे अर्थात हमे कोई भी नहीं रोक पायेगा। हमे हमारे दिन के ६०,००० सेकंड यही संकल्प और सोच में लगाने है कि हम सब आत्माएं परम तत्त्व, परम ज्योति सूर्य की भांति प्रकाशित हो गए है। जब १०८ , ९ लाख आत्माएं सूर्य की भांति परम प्रकाश समान बन जाएगी तब वायुमंडल बदल जायेगा। जब हम परम तत्त्व के सागर समान बन जायेंगे तब वाहुमंडल में ऐसा परिवर्तन आएगा कि आम इंसान किसी भी प्रकार के विष्य विकार का चिंतन नहीं कर पायेगा क्योंकि वहुमण्डल उसके अंदर किसी भी प्रकार का नेगेटिव विब्रेशन्स को आने नहीं देगा।

गीता में भी श्री कृष्ण ने कहा है ज्ञान जैसे पवित्र बनाने वाली ना कोई चीज़ है ना कोई तत्व। ज्ञान में ही आनंद है। ज्ञान से ही सुख प्राप्त होता है। हमारी आत्मा की चेतना का स्तर बढ़ जाता है तब हमारे आत्मा में बल और शक्ति आती है। हमें हमारी बुद्धि बेहद में लगानी है। आपको परम सुख का अनुभव कब होगा? जब आपमें परम तेज परम लाइट आएगी । जब आप परम लाइट से भरे होंगे तब जो आपकी रचना आपके १०० ट्रिलियन सेल्स में से निकली है चाहे वो साकार रूप में हो, सूक्ष्म जगत में हो या पारलौकिक जगत में हो, उन्हें आप सुख शांति का अनुभव कराएँगे। आपकी रचना को जो चाहिए वो प्राप्त होगा- मुक्ति चाहिए होगी तो मुक्ति मिलेगी और ज्ञान चाहिए होगा तो ज्ञान मिलेगा। आप यदि बेहद में होंगे तो आप अपनी रचना को बेहद की ख़ुशी दे पाएंगे। आप अपनी रचना को जीवन मुक्ति देने के निमित बन जायेंगे और जीवन मुक्ति के दाता बनेंगे। हमे उस बेहद के बाप पर केवल निश्चय करना है और हमे अपना कर्म करना है बाकि बेहद के बाप करवा लेंगे।

वायुमंडल को बदलना है तो बापूजी का ज्ञान सुने - खुद कि अवस्था चढ़ती कला बनेगी और हमारी सोच बेहद में जाएगी और पवित्र बनेगी। हमारा ओरा पवित्र ; वाइट लाइट से भर जायेगा। हमेशा संकल्प करे की हमारे हर श्वाश से परम तत्त्व हमारे अंदर आ रहे है और बाहर वायुमंडल में फैल रहे है। हमारे चारो ओर वाइट Pure लाइट का कवच बन गया है। हमारे दिल में हमारे दिमाग से ५००० गुना ज़्यादा शक्ति होती है (साइंस ने इसे प्रूफ किया है). यदि हम बेहद के बाप को दिल से याद करते है और उनसे लवलीन अवस्था बनाते है तो हमारे अंदर अनंता अनंत ब्रह्मांडो की शक्तियां आती है। ज्ञान के सिवा कुछ सोचना नहीं है। जैसे जैसे आपकी आत्मा की शक्तिया बढ़ेगी, आपको बेहद का ज्ञान समझ आने लगेगा।

बेहद के जो बच्चे है उनको ये संकल्प करना है कि मैं बेहद के बेहद की परम परम परम महान आत्मा हूँ। इसे हमारे विब्रेशन्स क्रिएट होंगे। निरंतर यही सोचना है मैं बेहद के बेहद की परम परम परम महान आत्मा हूँ। मैं भृकुटि के बीच में रहती हूँ । मेरा रचियता बेहद के दादाजी है और बेहद के दादाजी से पावर लेनी है। आकारी स्वरुप में भी निराकारी रूप ऑलमाइटी से पावर लेते हुए हमे संकल्प करना है बेहद के बेहद की परम परम परम महा शांति है। आपका ऑरा भी अच्छा हो जायेगा। जब आत्मा आत्मस्वरूप की अनुभूति करती है तो उसकी बुद्धि में बेहद का वैराग्य आएगा। हद की चीज़ो से वैराग्य आएगा। आत्मा में पावर आएगी। आत्मा लाइट स्वरुप का अनुभव करेगी। जब आत्मा आत्मस्वरूप की अनुभूति करेगी उसके कारण और सूक्ष्म शरीर में परम तत्त्व आयेगें। वो परम सुख का अनुभव करेगी। आपका ऑरा भी परम तत्त्व का हो जायेगा। बुद्धि हमेशा बेहद के ज्ञान में रहेगी। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा।

<u>ज्ञान सार:</u> ८ घंटे बेहद के ज्ञान में लगाए. आत्म स्वरुप का अनुभव करे। ओरा क्लीन करे। ओरा परम लाइट से भरा रहे उसके लिए योग करे. वायुमंडल परिवर्तन करे। परम तत्त्व परम लाइट उतारे अपने अंदर। यही पुरुषार्थ रहे मै बेहद की परम परम परम अच्छा / अच्छी हूँ। हमें बुद्धि से बेहद की कला से भी पार जाना है और बेहद की शक्तियों को याद करना है और बेहद के बाप से पावर लेनी है।

आत्म स्वरुप से परम लाइट की अनुभूति

आज सभी जानते है की इस शरीर को चालने वाली आत्मा होती है। आत्मा के अस्तित्व को सभी धर्म मानते है। कोई आत्मा कहते है, कोई रूह बोलते है कोई "सोल" कहते है। आत्मा हमारे बड़े माइंड के बीच में रहती है। साइंस अभी आत्मा के अस्तित्व को मानते नहीं है। लेकिन उनका मानना है की आत्मा एक कॉन्ससियस एनर्जी है जो जागृत है। आत्मा भृकुटि के बीच में रहती है। हमारे शास्त्रों में आत्मा को ब्रह्म स्वरुप भी कहा गया है। ब्रह्म माना लाइट। शिव के निराकारी रूप को ब्रह्म कहेंगे। आत्म स्वरुप की अनुभूति करने के लिए पहले ये संकल्प बार बार दोहराना पड़ता है मैं आत्मा हूँ। चलते फिरते काम करते यही पुरुषार्थ चले मैं आत्मा हूँ। इसे मनुष्य अपने अशरीरीपन का अनुभव करता है। आत्मा एक ज्योतिस्वरुप है। आज इस तमोप्रदान वायुमंडल में मनुष्य के लिए आत्मस्वरूप का अनुभव करना बहुत मुश्किल है। आत्मस्वरूप की अनुभूति आत्मा को परमात्मा के साथ कनेक्शन करके हो सकती है। गीता में भी लिखा है, " तू मुझको देह और सर्व सम्बन्ध भूल कर आत्मस्वरूप बन मुज परमात्मा को याद कर तो मैं तेरे सारे पापो को विनाश कर दूंगा।" आत्मा जब निराकारी शिव परमात्मा से जुड़ती है तो उसमे पावर आती है और कारण शरीर में भी पावर आती है। थोड़ा विकर्म विनाश होता है लेकिन वो एनर्जी का नेगेटिव विचारो और संकल्पो से यूज़ करने से पावर वेस्ट हो जाती है।

आत्मस्वरूप बन परमात्मा को जब याद करते है तो परमात्मा की शक्ति आती है। साधु संत गुरु को याद करने से कोई पावर नहीं मिलती। गीता में भी कहा है जिसको याद करोगे उसे पयोगे। इसलिए योग हमेशा परमात्मा (ऑलमाइटी अथॉरिटी) से लगाना चाहिए। डायरेक्ट पावर हाउस से योग लगाना चाहिए। आत्मस्वरूप की अनुभूति कैसे होगी ? आत्मस्वरूप की अनुभूति करने के लिए आत्मा में शक्ति चाहिए। केवल बोलने मात्र से मैं आत्मा हूँ आत्मस्वरूप की अनुभूति नहीं होती। यह एक लम्बा पुरुषार्थ और अभ्यास है।

अंतिम पुरुषार्थ मन का मौन। अंतर मुखी सदा सुखी। दिव्य स्वरुप को धारण करना है। बेहद के बाप का रूप धारण करने से विकर्म विनाश हो जाते है। आत्मा हलकी हो जाएँगी। अति इन्द्रियों के सुख का अनुभव होगा। धरती पर रहकर पांच तत्वो में परम तत्वो के स्वरुप का अनुभव होगा। व्यक्त से अव्यक्त स्वरुप को धारण करने का अनुभव करेंगे। बेहद का विश्वपरिवर्तन होना ही है।

YOUTUBE CHANNEL की महत्वपूर्ण जानकारी

बापूजी के बेहद ज्ञान सागर में सभी बेहद की आत्माओ का स्वागत है। यहाँ नीचे दिए गयी जानकारी को ध्यान से पढ़े। बापूजी के यूट्यूब चैनल में ५०० से ज्यादा इंटरव्यूज के वीडियो है। कुछ विशेष वीडियो की जानकारी नीचे दी गयी।

1. लाइफ आफ्टर डेथ (मृत्यु के बाद का जीवन) पार्ट १ & २
2. क्या पति-पत्नी का पिछले जन्मों का रिश्ता होता है?
3. आत्मा के 10 अदभुत रहस्य
4. भविष्य की दुनिया पार्ट १ & २
5. मृतक आत्मा को क्यों याद न करे ? उनकी फोटो क्यों न लगाए ? उनके कल्याण के उपाय
6. सदी का श्रेष्ट वीडियो।। कैसे जन्मी थी "मौत" ?
7. मोस्ट पावरफुल वाइब्रेशन जो यूनिवर्स को बदल सकते है
8. कल्कि अवतार
9. बेहद की परम महाशांति मंत्र का अर्थ
10. मृत्यु और पुनः जन्म के बीच का समय
11. वर्ल्ड ड्रामा (समय चक्र)
12. जजमेंट डे
13. आत्मा स्वरुप में परम लाइट की प्राप्ति
14. सीक्रेट ऑफ़ योगा, योग कैसे करे?
15. ब्रह्माण्ड के सर्जन का रहस्य ?

16. आध्यात्मिक ज्ञान की महत्वता

17. दुनिया परिवर्तन की भविष्यवाणी

18. कारण शरीर की वासना से मुक्ति

19. श्रीमद भगवत गीता सार

20. मोक्ष और जीवन मुक्ति का रहश्य

21. अतिगुप्त कर्मा का फल जिसका साक्षी खुद और खुदा हो

22. काला जादू और अध्यात्म

23. सुक्ष्म शरीर , कारण शरीर , महा कारण शरीर के रहश्य

24. तीसरे नेत्र की विस्तृत जानकारी

25. परम महा शिव योग

26. आत्मा बल को कैसे बढ़ाये

27. बेहद के अविनाशी परमधाम का वर्णन

28. समय यात्रा

29. मंगल ग्रह पर जीवन

30. शक्ति पात का अनजाना सच

31. बापूजी के जीवन का परिचय

32. ३६ यक्ष के प्रश्न, युधिष्ठिर के जवाब

33. ६० सुपर इंटेलीजेंट रैपिड फायर प्रश्न-उतर

लोगो की सुविधा के लिए बापूजी के चैनल पर प्लेलिस्ट बनाई गयी है जिनके नाम " अनस्पोकन ट्रुथ " और "इंटरव्यू विद बापूजी" है। ऐसे सवाल जो मनुष्य को अपने अस्तित्व को जानने के लिए मजबूर कर दे। अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होते हुए अपने और उस परमात्मा से जुड़े अनकहे रहस्य को जानने के लिए ऊपर दी गयी वीडियोस को अवश्य देखे। निश्चित आपका जीवन बदल जायेगा।

आज ही बापूजी का यूट्यूब चैनल को सर्च करे, यूट्यूब में लिखे "**बापूजी दशरथभाई पटेल**"

या फिर www.youtube.com/anant98251 क्लिक करे और चैनल को सब्सक्राइब करे।

ताकि हमारे सभी आनेवाले नए वीडियो आप बिना रूकावट देख सके।वीडियोस को लिखे और कमेंट ज़रूर करे।

आप सभी से निवेदन है की आप यह सभी वीडियो के लिंक अपने करीबी रिस्तेदारो और दोस्तों के साथ व्हाट्सप पर शेयर करे ताकि दुनिया तक यह परमज्ञान पहुँच सके।आपकी छोटी सी कोसिस समस्त विश्व को बदल शक्ति है । कोई भी कर्म कभी खली नहीं जाता। हर जीवात्मा का कल्याण हो।

परम शांति
- अनंत पटेल

संपर्क कैसे करे:

Email id: anant98251@yahoo.com, saakshi1985@gmail.com .

You can contact us on Bapuji's official YouTube Channel: www.youtube.com/anant98251

Web site: www.paramshanti.org
www.facebook.com/discoveryofnewworldcom
https://instagram.com/bapujidashrathbhaipatel

Address: Vishwa Parivartak Ishwariya Vidhalaya.
C/o Radhe Community Hall, Near Chenpur Bus Stand,
Village Chenpur, New Ranip Road. Ahmedabad – 382470.
Gujarat.

माँ का दिव्य सन्देश

मैं सभी भाई बहेनो को यहाँ बेहद के बाप का एक सन्देश देना चाहूंगी। अंतिम बेहद का समय शुरू हो गया है। अंतिम पुरुषार्थ है। अब समय आ गया है की सभी को बेहद के परमात्मा का परिचय दे दिया जाये और सबको इतना सन्देश दे दिया जाये की ऑलमाइटी अथॉरिटी (ALMIGHTY AUTHORITY) बेहद का बाप धरती पर आ गया है और बेहद का कार्य चल रहा है। वो अविनाशी दुनिया और नयी दुनिया का निर्माण का ज्ञान दे रहे है। साकार रूप में बेहद के ऑलमाइटी अथॉरिटी का कार्य धरती पर चल रहा है। अब समय आ गया है जब सारे विश्व में बेहद का बाप के साक्षत्कार होंगे, सभी हद और बेहद की दुनिया में बेहद का बाप प्रत्यक्ष हो जायेंगे। मैं यह मैसेज इसलिए सभी तक पहुँचाना चाहती हूँ कि अंत में कोई उलाहना न दे की भगवान् धरती पर आया और हमे बताया नहीं। क्योंकि व्यक्त समय की घड़ी पूरी होने को है और अव्यक्त दुनिया और समय आने वाला है। अचानक सब कुछ होगा। बेहद का बाप बेहद के बच्चो को दिव्य आलोकिक विमान में परम प्रकाश और परम दुनिया में ले जायेंगे। यह स्थूल दुनिया का परम तत्वो में परिवर्तन हो जायेगा । मुक्ति और जीवन मुक्ति भी शुरू हो जाएगी। जब परम तत्वो और परम प्रकाश धरती पर आएंगे तो कमज़ोर आत्माये उस शक्ति को नहीं सहन कर पाएंगे इसलिए अभी से हमे तीर्व पुरुषार्थ करना है और अपने संकल्प विश्व परिवर्तन में लगाने है। अब अंतिम उड़ान का समय है।

"ऑलमाइटी अथॉरिटी हमें बेहद की दुनिया में लेने आये है, जो परम तत्वो और परम प्रकाश की है। आने वाला युग अविनाशी युग - अमरलोक बनेगा। बेहद का परिवर्तन हो जायेगा।

Silence - माना योग की शक्ति नवीनता की लहर लाएगी"

परम महा संकल्प (AFFIRMATIONS)

मैं बेहद की परम परम महान आत्मा हूँ । मैं परमात्मा के समान ब्रह्म स्वरुप आत्मा हूँ । मैं बेहद की विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ । मैं बेहद के विश्व को बदलने के लिए एक निमित आत्मा हूँ ।

मैं बेहद की परमशान्ति स्वरुप आत्मा हूँ । मैं बेहद परमानन्द स्वरुप आत्मा हूँ। मैं कर्मयोगी आत्मा हूँ। मैं तपस्वी रूप आत्मा हूँ। मेरी आत्मा परम प्रकाश की है । मैं परम दिव्य लाइट स्वरुप आत्मा हूँ।

मैं एक प्रकाश के समान परम प्रकाश स्वरुप में हूँ। मैं परम सुख में हूँ।

मेरा स्वरुप दिव्य लाइट और परम शक्तियों से भरपूर है। मेरी आत्मा और शरीर परम लाइट और परम तत्वों से भरी हुई है।मैं बेहद की परम परम महान आत्मा हूँ । मेरा स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर परम लाइट से चार्ज है।

मेरे चारो ओर "बेहद की परम परम महा शांति" के विब्रेशन्स है। मेरे अंदर से परमशान्ति की तिरंगे चारो ओर फ़ैल रही है। समस्त जगत में परमशान्ति हो रही है। समस्त ब्रह्माण्ड में परम परम महा शांति हो रही है। समस्त ब्रह्मांडो, गैलेक्सी और यूनिवर्स में परम शांति हो रही है। समस्त ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड, परम महा ब्रमांडो में परम परम महा शांति हो रही है। स्थूल, कारण और महा कारण जगत में परम शांति और परम सुख हो रहा है।

मैं फरिश्ता स्वरूप हूँ। मेरा शरीर स्वस्थ और अच्छा है। बेहद का परम परम परम अच्छा हो रहा है। मैं बेहद के परमधाम में स्थित परम आनंद में हूँ। मेरे चारो ओर परम प्रकाश है। मेरा ऑरा परम प्रकाश और दिव्य लाइट का है।

मैं बेहद खुश और सुखी आत्मा हूँ । मैं सम्पन, सम्पूर्ण और पवित्र बेहद की आत्मा हूँ । मैं बेहद के परमपिता परमात्मा का अंश हूँ और बेहद की महान आत्मा हूँ । मैं बेहद की परम परम महान आत्मा हूँ। पुरे विश्व में बेहद की परम परम महा शांति हो रही है।

इन्ही दृढ़ संकल्पो से वायुमंडल बदलेगा अर्थात परमशान्ति के विब्रेशन्स से परम शांति समस्त ब्रमांडो और लोकों में हो जायेगा । **प्रबल संकल्प शक्ति से विश्व परिवर्तन निश्चित है।**

बेहद का महा मंत्र विश्व शांति के लिए

"बेहद की परम महा शांति सोचो बोलो, परम महा शांति मिल जाएगी।"

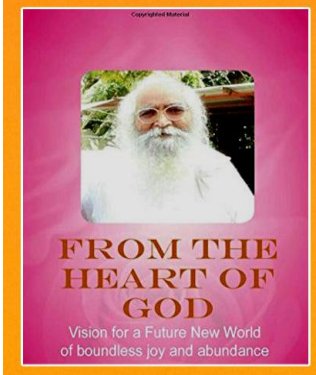

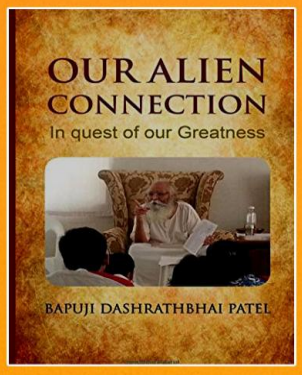

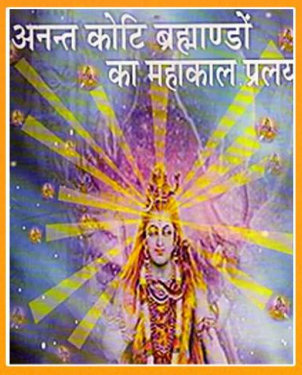

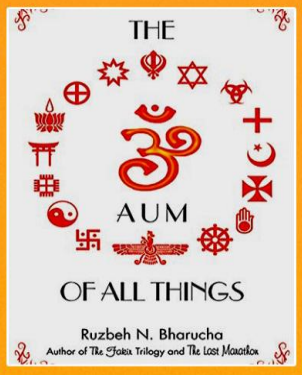

आत्मा का मूल लक्षण परमानन्द स्वरुप है । प्रत्येक जीव अपने आप को ब्रह्मस्वरूप समझते हुए उस परमात्मा अर्थात अपने रचिता में लीन होकर उच्च ते उच्च बेहद के अविनाशी लोको में अपना वास करे उसी अवस्था को आत्मा स्वरुप कहते है। जीव का लक्ष्य " जीव से शिव" बनने का होना चाहिए।

"स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन है"

www.paramshanti.org

www.youtube.com/anant98251